

DPN 6377

Title : कालभैरवाष्टक KĀLA BHAIKAVĀṢṬAKA

Run. No. 7068

Cat. No.

Micro. No.

Subject ~~संगीत~~ Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 27 x 13.2

Folios 2

Lines (in a page) 10/12

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1917

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ = ॥ ॐ तिस्रनांदष्टेति प्रथम भैरवस्माः ॥

इति श्री कालि खंडे पुराणे (काशी खण्डे ब्राह्मणे) काल भैरवाष्टकं समाप्तं हुम् ॥ ...

इति श्री सप्तमः १९०१७ (१९१७) साल मिति ७ वदि २ रोज दु मा उत्तरा कुन्धे जम्बु दिदे : क्षेत्रे
नेपाल (नेपाल) खण्डे मध्य इन्द्र मति जगा पूर्वे मैत्रः वासुदेय कुमिनाम पोस्तक मोषिते :
भजंते नाम अपंतं मैत्रः मम दोष्य (दोष) नदि यते ॥ १ ॥

५८ को लोभैरे वा ७८ क

भैखनामतत्रेयामाहापोस्तकमयम्

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ = ॥ ॐ तिष्ठता दंष्ट्रेति प्रथम भैरवस्याः ॥ यै यै यै यक्षरूपं दसदिसव
 सितां भूमिकं पायमात्रं ॥ सै सै सै सै हारमुक्ति सिरमुकुटजटासेखरं चंद्रविवं ॥ दै दै दै दिवका
 यां विरुतत खमुखमुषं रुद्रो मंकरालं ॥ पै पै पै पापना संप्रनमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ १ ॥
 रै रै रै रक्तवर्णं कटकटिततनुक्षणा दंष्ट्रे करालं ॥ वै वै वै घोषघोरं घघघघघटितं घघोराघोर
 नादं ॥ कै कै कै कालपासंधुकधुकधुकितं ज्वालिता कामविवं ॥ तै तै तै दिव्यदेहं प्रनमत सततं
 भैरवं क्षेत्रपालं ॥ २ ॥ लै लै लै लुबोदरं तं लुलुलुलुलुलितं दिव्यजिह्वा करालं ॥ धुं धुं धुं धुम
 वर्णं स्फुटचिह्नं मुखं भास्वरं भिमरूपं ॥ हूं हूं हूं हूं उमाला रुधिरमग्निमयं ताम्रचंकरालं ॥ तै तै
 तै नगहं प्रनमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ३ ॥ वै वै वै वायुवेगं सिधुतरं वल्गुपारंपरं ॥ खै खै
 खै खै हंसं विभुवनिलं यं भास्वरं भिमरूपं ॥ चै चै चै चै लंतं चालचलिचलिता भूतपदं ॥ मं मं
 मं मायाहं प्रनमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ४ ॥ सै सै सै सै खहंसं सिसि करधवलं मोक्षे संकुर्यां

राम०
 ॥ १ ॥

तेजं ॥ मं मं मं मायाहं कुलमुकुटकुलं मंत्रमुक्तिस्तुतियं ॥ यै यै यै भुतनाथं किलकिलितवरं ग
 र्गा गृरालुलंतं ॥ अै अै अै अन्नरिक्ष प्रनमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ५ ॥ खै खै खै खै भुमेदं विसम
 मतमयं कालुकालं करालं ॥ क्षै क्षै क्षै क्षिप्रवेगं दहदहदहंतं प्रसंदिपमानं ॥ हौं हौं हौं हं कार्तादं प्र
 कटितगहनं गर्जितभुमिकं पायां ॥ वै वै वै वाललिला प्रनमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ६ ॥ सै सै सै सिधियो
 गं सकलगुणमया देवदेव प्रसन्नं ॥ पै पै पै पद्मरुसं हरिहर भवतं चंद्रसूर्या नितेजं ॥ हूं हूं हूं हेश्वर्य
 नाथं सततं भयहरं सर्वदेखरूपं ॥ रौं रौं रौं रूद्ररूपं प्रनमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ७ ॥ हूं हूं हूं हंसं
 हंसितकहकहं भुक्तयेगा दहसं ॥ यै यै यै यक्षरूपं सिरकोपिलजटा चंद्रचूडा गहस्या ॥ टै टै टै टै कारवा
 त्रिदसल्ललं कामदर्पोपिहारं ॥ भौं भौं भौं भुतनाथं प्रनमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ८ ॥ भैरवाय कामिदं पु
 न्यथा रामसये पदेत्तर ॥ सयाति पमस्थानं यत्र देवि महेश्वरं ॥ ९ ॥ इति श्रीकासिखंडे पुराणे कालभैर
 वायकं समाप्तं शुभं ॥ यादि व्यापुस्तं कंद्रिआतादि संलिखितं मया ॥ येदि शुद्धममशुद्धे वा मम दोषो
 नदियते ॥ १० ॥ इति श्रीसम्वत् १८०१ सालमिति १ वदि २ रोजमाः जितरकुने जमुदियेः क्षेत्रे ये पाज खराउ
 मध्ये ईदमति गंगा पुर्वे भैरववासये भुमिना मपोस्तकले धितैः भजंतं नाम जयंतं भैरवममदोषनदिभेते ॥ ११ ॥

राम०
 ॥ २ ॥

भैरवनामतन्त्रयाम्महा
पौस्तक